DEFENCE जिनशासन

मार्गदर्शन : अनेक गीतार्थ गुरुभगवंतो प्रकाशक : गिरिराज गुंजन ग्रुप मूल्य : १० रु.

संपर्क : गिरिराज गुंजन : 9974300912 | E-mail : girirajgunjan9@gmail.com

भाषांतर : पू. रम्यप्रेमविजयजी म.सा. । टाइपींग : विश्वभाई संदीपभाई शेठ

सच्चा सेवक वो, जो 'सेवा' करे सदा

देरासर के एक कोने में आग लगी है ।
चिल्लाचिली होती है ।
सब भक्त एक साथ दौड़े
तो ही काम हो सके ऐसा है ।
किन्तु भक्तों को पूजा की
लाईन में नंबर गुमाना नहीं है ।
भक्तों का मुश्किल से नंबर लगा है
तो प्रभु को दिल से मिल लेना है ।

भक्तो एक एक अंग उपर १५-१५ सेकन्ड तक
अंगुली रखके पूजा कर रहे है ।
भक्त महकते हुए फूल माला
प्रभु का पहना रहे है ।
आग बढ़ रही है ..

"अरे सब जल्दी आओ ..
एक साथ पाणी छिडको ..
सब खलास हो जाएगा ..
कोई फायर ब्रिग्रेड को बुलाओ..."

चीखें एकदम स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही है
किन्तु..
भक्तों को भक्ति छोडनी ही नहीं है
नहीं.. सच कहुँ तो
भक्तों को भक्ति करनी ही नहीं है ..
उनकों मात्र उनकी जड़ता में रहना है ..

"करनेवाले करेंगे ..
ट्रस्टीओं की जिम्मेदारी है..
मैं तो भक्ति (?) के लिए आया हुं ।
मेरे पास मर्यादित समय है,
तो भक्ति (?) ही कर लूँ ना ?
यह फायरब्रिगेड को बुलाने भागदौड़ करूँ ,
उसके आदमीओं को पैसे बहाऊँ..
उससे अच्छा दादा का एक सुंदर (?)
चड़ावा ही न ले लूँ ?.."

बात अपने 'महातीर्थ' की है ..
अगर अपनी परिस्थिति भी यही है ,
तो हम सच्चे सेवक तो नहीं,
शायद धोखा देनेवाले भक्त भी नहीं,
परंतु एक अपेक्षा से दुश्मन है ।

Real Question

"आप
आपके बेटे की
बर्थ-डे पार्टी
जबरदस्त हो जाए,
उसके लिए
इतनी महेनत कर रहे हो,
परंतु क्याँ आपको मालूम नहीं ?

कि उसका इतना भयंकर
एक्सीडन्ट हो गया है ?
उसकी हड्डी तुट गयी है,
उसका बहुत सारा खून बह गया है ।
वह जीवन-मृत्यु के बीच झोलें खा रहा है ।
उसे जल्द से होस्पिटल में
एडमीट होने की जरुर है ।
उसे ओपरेशन और सारवार की जरुर है ।

आपको कुछ सुनाई दे रहा है या नहीं ?
किस को फोन कर रहे हो आप? १०८ को?
"नहीं"
"तो .. डॉक्टर को ?"
"तो फिर किस को फोन कर रहे हो ?"

"केक वाले को"
बेटे का जीवन ही जोखिम में हो,
तब बर्थ डे पार्टी की तैयारीया या
उसके बेस्ट सेलिब्रेशन का
सीधा मतलब मूर्खता होता है ।

आज 'महातीर्थ' की यह जरूरत है

कि आपका समय नव्वाणु या अलग से यात्रा करने के बदले उसकी रक्षा के लिए दो ।

आज 'महातीर्थ' की यह जरूरत है

कि आपकी संपत्ति चड़ावे या
छोटे / बड़े अनुष्ठानों के बदले
उसकी रक्षा के लिए दो ।
कितने युवान बहुत सुझ – बुझ और
विवेकपुर्वक दीर्घद्रष्टि के साथ महातीर्थ – रक्षा का मजबूत कार्य कर रहे है ।

आपमें थोडा भी विवेक हो,
भक्ति हो तो उन्हकें साथ जुड़ जाओ ।
अब सच्चा सवाल पार्टी
कैसी होगी वह है ही नहीं,
बेटा बचेगा की नहीं वहीं है।

Your Choice

गिरिराज
के विषय में मिलती
एक प्राचीनतम
शास्त्रीय कृति
याने सारावली प्रकीर्णक सूत्र
यह सूत्र के ६९ वी गाथा में
एक अद्भूत बात की है ।
पूयाकरणे पुण्णं एगगुणं, सयगुणं च पडिमाए ।
जिणभवणेण सहस्सं, ऽणंतगुणं पालणे होइ ।।
पूजा करने से जो पुण्य की प्राप्ति होती है,
उससे १०० गुना पुण्य
प्रतिमा भराने से मिलता है ।
उससे १००० गुना पुण्य
जिनालय बनाने से मिलता है
और
उससे अनंत गुना पुण्य
जिनालय / प्रतिमा / तीर्थ की
रक्षा करने से मिलता है ।
दूसरे शब्दों में कहे तो
पूरे समंदर जितने केसर का उपयोग हो
उतनी पूजा करे
उससे भी 'रक्षा' का पुण्य ज्यादा है ।
पुरी धरती को जिनालयों से सजा दे
और एक – एक जिनालय में
१०८-१०८ प्रतिमाए भराई जाय
उससे भी 'रक्षा' का पुण्य ज्यादा है ।
रक्षा की अत्यंत जरूरत हो उस समय भी
रक्षा के लिए न १ रुपया देना,
और न एक दिन देना ,
और हमारी मानी हुई भक्तिमें ही लीन रहना ;
वह वास्तव में भक्ति ही नहीं है।
वह उपेक्षा है, अवज्ञा है,
और सूक्ष्मद्रष्टि से देखे
तो महातीर्थ के विनाश की
अनुमोदना भी है और
महातीर्थ के प्रति शत्रुता भी है ।
हमे क्या करना,
वह हमें तय करना है ।

विमलाचल नितु वंदीअे कीजे अेहनी सेवा

हम सब गिरिराज और दादा के परम भक्त है । नियमित यात्रा करते है ।
पसीना बहाकर उपर पहुँचते है । कितनी भी साँस चडे तो भी उल्लास से चढ़ते है ।
शक्ति से ज्यादा पैसे खर्च करते है ।
सुविधा हो तो बड़े चडावे से लेकर बड़े अनुष्ठन कराने तक सब कुछ कर बताने वाले ।
लाख रूपये का प्रश्न यह है कि हमने आज तक में 'सेवा' के नाम पर क्या किया ?
North और South से १५००-२००० कि.मी. से युवान ३ दिन गिरिराज सेवा के लिए आ रहे है ।
हमने कितने दिन सेवा की ? नहीं, यह यात्रा की बात नहीं ।
आप नव्वाणु करके आए या छट्ठ करके सात यात्रा करके आए उसकी भी यह बात नहीं ।
यह बात है गिरिराज के सेवा की , अच्छी व्यवस्था और सुरक्षा में हमारे योगदान की ।
अगर उसके नाम पर हमारे पास शून्य से ज्यादा कुछ नहीं है, अगर हमे उसकी कोई फिकर नहीं है,
अगर हमारी ऐसी ही वृत्ति है कि मैं तो मेरी यात्रा करके चला – वो सब मैं न जानुं ,
तो वह यात्रा भी यात्रा मिटकर स्वार्थ बन जाएगी ।

भीतर में 'सेवा' को जगाओ । 'सेवा' को प्रायोरिटी दो
'सेवा' के बिना मेवा नही मिलेंगे ।

Giriraj Says

मेरी सुरक्षा हो पाएगी संवेदना और समझदारी के समन्वय से

या आपके अंदर कोई आंदोलन ही न जगे,
या आप देखे – सोचे बिना आंदोलन छेड दो, यह दोनो चीज नुकशान करने वाली है ।
आंतरिक आंदोलन याने संवेदना के तार बज उठे ।
मेरे पर आई हुई आपत्ति से दुःखी दुःखी हो जाना ,
अगर आप निःशूक हो गए हो, तो आपको ऐसा कुछ नहीं होगा ।
यह चीज भी भयंकर है.. और आप विवेक और समजदारी बिना आंदोलन शुरू कर दो ,
दीर्घद्रष्टि बिना ऐसे ही कूद पड़ो , यह चीज भी भयंकर है ।
कितनेक लोगों में बहुत समजदारी भरी हुई है, परंतु मैं जीवन – मृत्यु के बीच झोले खाता रहुँ, तो भी उन्हें कोई फरक नहीं पड़ता ।
जिस प्रकार निःशूकता से मेरी सुरक्षा शक्य नहीं, उस प्रकार अकेली संवेदना या अकेली समजदारी से भी मेरी सुरक्षा शक्य नहीं ।
मेरी सुरक्षा हो पाएगी संवेदना और समझदारी के समन्वय से
जहाँ यह समन्वय होता है, वहाँ परफेक्ट पुरुषार्थ साकार होता है और जहाँ परफेक्ट पुरुषार्थ साकार होता है
वहाँ १००% सफलता मिलती है । आशा के इस किरण को सूरज बन जाने दो सभी अँधेरा मिट जाएगा ।

आप...हा, मैं आप की ही बात कर रहा हुँ। आप अगर मैं कह रहा हुँ ऐसा करो तो मेरी रक्षा 100% हो जायेगी।

Giriraj Says

बोलो, इतना करोंगे ?

१) आप मेरी यात्रा के लिए जो समय देते हो या मेरी छाया में रहने के लिए जो समय देते हो, वह समय मेरी रक्षा के लिए देने का शुरू कर दो ।
२) रोज Min. ५ मिनिट निकालकर मेरे महिमा का विविध माध्यमो द्वारा प्रसार करो ।
३) आप छोटा / बड़ा जो भी अनुकंपादान करो, वह मेरी रक्षा के लिए प्रयत्नशील युवानों के साथ मेरे परिसर में करो ।
४) रविवार और दूसरें भी छुट्टी के दिनों में कुछ समय मेरी रक्षा के कार्य में लगा दो।
५) आपकी छुट्टी के विविध यात्राओं के / घुमने – फिरने के दिन मिलाकर कम से कम चार – छह महिने में सात-आठ दिन मेरे परिसर में रक्षाकारी युवानों के साथ रहो और उन्हे सहयोग दो ।
६) आपके परिवार – दोस्तों के दायरे में यह पांचो मुद्दो का प्रचार कर के उन्हके पास ऐसा संकल्प करवाओ और उन्हे भी इसका प्रचार करने कहो ।

मरे हुए विचार छोडो, रग रग में जिनशासन का जोश भरो
अति उत्साह से सभी शक्ति लगाकर काम करने लगो
सफलता इसकी ही प्रतिक्षा कर रही है । सफलता को इससे ज्यादा कोई भी अपेक्षा नही है ।

गिरिराज Says

या द्रव्य की नियोजन ही न होता हो,
या मात्र तीर्थ / जिनालयनिर्माण
और जीर्णोद्धार में होता हो,
तो रक्षा कैसे होगी ?

बनाया, जीर्णोद्धार किया किन्तु बचाया ही नहीं
तो तीर्थ कैसे टीकेगा ?
कोमनसेन्स से भी समज में आए ऐसा है
कि एक निर्माण की अरजी हो,
एक जीर्णोद्धार की अरजी हो,
और एक रक्षा की अरजी हो,
एक ही जगह अच्छा नियोजन करना
मुमकीन हो तो 'रक्षा' के क्षेत्र में ही
नियोजन करना चाहिए ।
मुझे दुनियाभर के संचालकों को
एक प्रश्न करना है
कि आपने 'रक्षा' के लिए आज तक में
कितना नियोजन किया ?
१% भी सही ?
नहीं ? बिलकुल नहीं ?
तो तीर्थ बचेगा कैसे ?
उसकी कोई अरजी ही नहीं आती ?

Well,
उसका अर्थ क्याँ यह है कि
रक्षा के क्षेत्र में कोई जरुरत ही नहीं,
या फिर यह है कि
रक्षा के लिए खून – पानी एक करनेवाले और
जेब के पैसे खर्च करनेवाले वे
मेरे परम भक्तों को
रक्षा के लिए अत्यंत जरूरत होते हुए भी
आपके पास से कोई आशा ही नहीं ।
आप सीरियसली विचार करोंगे ?
एक आदमी मर रहा है ,
उसकी प्रोपर्टी बहुत है ।
परंतु उसमें से उसकी
दवाई – सारवार करनी ही चाहिए,
इतनी बात उसके संचालकों को
समज नहीं आती ।
"हा, उस व्यक्तिके कपड़े–घर–
बंगले बनाने हो तो बोलो, सभी तैयारी है।
दवा–सारवार के लिए कुछ हो सके ऐसा नहीं"
बोलो,
मेरे विषय में ऐसा ही हो रहा हो
ऐसा नहीं लगता ?

मेरी यात्रा में लाखों मेरे जतन में खो खो

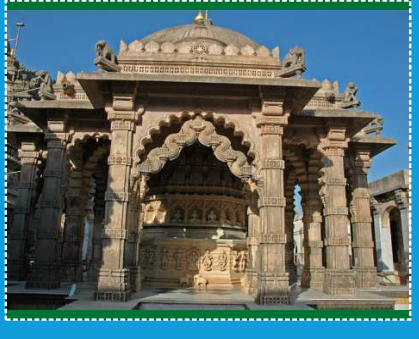

देश के और विश्व के
ज्यादातर संचालकों की
परिस्थिति ऐसी है
कि उन में शासन संवेदना नहीं है
और उन्हें दे सकना भी मुमकीन नहीं ।

बहुत है परंतु कुछ काम आए ऐसा नहीं
ऐसा दुःखद द्रश्य है ।

ज्यादातर श्रीमंत बेटे को
मुह – मंगी बिनजरुरी २१ / ३१ / ४१ लाख की
कार भी दिला सकते है।
परंतु शासनरक्षा के लिए आपातकालीन जरूरत होने
के बावजूत २१/ ३१ /४१ हजार या
सो देने का भी उनका उल्लास नहीं ।

तो अब बाकी रहे मध्यमवर्गीय ।
वे सब सोच रहे है कि
अपने से तो क्याँ हो सकता है ?
मैं कहता हुँ बहुत कुछ हो सकता है ।
साप का शब पड़ा है, उसका निकाल करना है ।
बड़े प्राणी / पंखी अकेले यह कार्य कर सकते है;
किन्तु नहीं करते ।
चीटियाँ काम पर लगती है ।
हज़ारो की संख्या में इक्कट्ठी होती है ।
साप को घेर लेती है और चमत्कार ..
साप का शब तुरंत आगे बढ़ने लगता है ।
अगर मध्यम वर्गीय
इस प्रकार काम पर लेगे तो गेरन्टी के साथ
मेरे पर की मुसीबतों के
सब मुद्दों का निकाल हो सकता है ।
बोलो करना है निकाल ?
इतना तय करो
प्रतिदिन Min. १ रुपया
शासनरक्षा के लिए देना ।

आपकी ज्यादा शक्ति हो तो
२/५/१०/२०/३०/५०/१०० रु. भी दे सको ।
जैसी आपकी शक्ति।
आप आपका खर्च कम करो..
मौज – शोख की कटौती करो..
चड़ावे वगैरह अभी के लिए गौण करो ।
तीर्थरक्षा की संवेदना
आपके रग – रग में भर दो।
और आपके जैसे लाखों को इक्कट्ठा करो ।
तो कुछ भी अशक्य नहीं ।
और अगर आप में भी कोई संवेदना नहीं,
तो फिर मुझे खतम हो जाने का
एक ही विकल्प बाकी रहता है ।

पालिताणा की हरेक धर्मशाला की हरेक रुममें लगाने जैसा पोस्टर/बेनर

Welcome To Palitana

साधना की सप्तपदी

सिद्धाचल महातीर्थ में आप सबका हार्दिक स्वागत है
आपकी यात्रा सर्वोत्तम फलदायी बनी रहे
उसके लिए यहाँ प्रस्तुत है

7 Tips

१) यह समग्र पर्वत देरासर है, यह पर्वत का कन कन भगवान है।

२) जो चीज मंदिर में नहीं कर सकते, वो इस पर्वत पर भी नहीं कर सकते । जैसे कि – खाना , पीना, शौच-टॉयलेट / हाजत , पुरुष-स्त्री का परस्पर स्पर्श, फिल्मी गाने सुनना, गेझेट पर प्रोग्राम्स देखना, वेस्टर्न ड्रेस पहेनना, डायपर – बोटल – रेपर बगैरे कचरा फेंकना । बूट-चप्पल पहेनना **etc...** ऐसा कुछ भी इस पर्वत पर नहीं किया जा सकता । बस , हर कदम "जय गिरिराज" – "जय आदिनाथ" बोलो और आगे बढ़ो ।

३) आपका स्टेमिना थोड़ा कम पड़े तो लिमिटेड पानी पीने की छूट रख सकते हो और कपड़े के चप्पल पहनने की छूट रख सकते हो, इससे ज्यादा कोई छूट मत लेना ।

४) यह महातीर्थ के चारों ओर – १० कि.मी. तक के परिसरमें – रात्रिभोजन, जमीनकंद – अभक्ष्य – बाजारू चीजों का भोजन , मैथुन सेवन, मोबाईल पर गंदे द्रश्य – श्रव्य देखना –सुनना , दूसरों की नजर बिगड़े ऐसे कपड़े पहेनना – बगैरह कोई भी पाप करने से भयंकर दुःखो को आमंत्रण दिया जाता है । अगर आप को दुःखी –दुःखी न होना हो, तो ऐसा भूल से भी मत करना ।

५) आप यहाँ घुमने नहीं आए , पाप बांधने नहीं आए, सांसारिक प्रवृत्ति करने नहीं आए, आप पापों को धोने आए हो, आपके अनंत भविष्य को सुधारने आए हो, यह लगातार याद रखना ।

६) तीर्थ के कोई भी स्टाफ या स्थानिक लोगों के साथ आदर और स्नेहभरा वर्तन करके उन्हें भी गिरिराज के दादा के भक्त बनाने का भाव रखेंगे तो तीर्थरक्षा का महापुण्य मिलेगा और उनके भी आत्मा का कल्याण होगा ।

७) अन्यस्थाने कृतं पापं तीर्थस्थाने विमुञ्चति ।
तीर्थ स्थाने कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ।।
अन्य स्थान में किये हुए पाप तीर्थस्थान में धोने में आते है ।
परंतु जो मूर्ख तीर्थस्थान में आकर भी पाप करे उसका पाप वज्रलेप जैसा बन जाता है । वह पाप तो रो-रोकर भी भुगतना ही पड़ता है।

Plz. Be Alert. Be smart.
आप यहाँ पर लखलूट कमाई करने आए हो, कंगाल होने नहीं ।
शुद्ध भारतीय मर्यादापूर्ण परिधान,
भगवान की आज्ञा का विशुद्ध पालन
और उत्कृष्ट भक्तिभाव..
आप इतना कर सको , तो आपने कमा लिया,
आप न्याल हो गए।
Wish You all the best.

प्रश्न :- वि. सं. २०७२ के श्रमण संमेलन के निर्णय मुताबिक तीर्थरक्षा के लिए शत्रुंजय की शिला अपने गाँव में आराधना के लिए ले जाने का भी निषेध किया गया है । फिर भी पालीताणा में जिनालय, धर्मशाला, भोजनशाला बगैरह में शत्रुंजय की शिलाओं का जानते – अनजानते उपयोग होता हो, तो क्या करना चाहिए ?

उत्तर - पहेले तो बहुत ही ध्यान रखकर उसका उपयोग होने नहीं देना चाहिए । सिद्धाचल महातीर्थ में से जिनालय के लिए भी पथ्थर उपयोग करना वह महातीर्थ के विनाश के निमित्त रूप होने से घोर – आशातना स्वरूप है । तो फिर भोजनशाला – धर्मशाला बगैरह में वापरने का तो सवाल ही कहाँ से आता है ? शत्रुंजय माहात्म्य में भी – प्रस्तरा नैव क्रष्टव्याः बगैरह विधानों के द्वारा एसी प्रवृत्तिओं का स्पष्ट निषेध किया है ।

फिर भी जो धर्मशाला – भोजनशाला में ऐसे पथ्थर का उपयोग हो ही गया हो वहाँ ज्यादा दोष से बचने के लिए दो विकल्प है ।

१) पुरी ईमारत उतार के शत्रुंजय की शिलाओं को वापिस उनके स्थान पर बहुमानपुर्वक रख देनी ।

२) वह मुमकिन न हो तो उस ईमारत को जिनालयतुल्य / गिरिराजतुल्य दरज्जा देना । अर्थात् उसमे पूजा, चैत्यवंदन , जाप आदि आराधना ही हो सकती है। खाना, पीना, सोना, रहना, टॉयलेट – बाथरूम जाना, कोई भी सांसारिक प्रवृत्ति करनी – बगैरह वहाँ नही ही हो पाएगा ऐसा नियम बनाना । उस स्थान पर वह नियम जगह – जगह लगाना और उसका चुस्त अमल कराना।

महातीर्थ के विनाश का घोर पाप और आशातना का घोर पाप यह दो से बचने के लिए ऐसे स्थान में रहने – खाने का संपूर्ण त्याग करना चाहिए। आपके गाँव / शहर में लाई हुई शत्रुंजय की शिला के समक्ष आप जो प्रवृत्ति करते हो, वही प्रवृत्ति ऐसी धर्मशाला आदि में करनी चाहिए, उसके अलावा कुछ भी नहीं करना चाहिए ।

एक काल्पनिक सत्य घटना

भक्त - हे सीमन्धर स्वामी भगवान ! अभी हम पालिताणा की यात्रा करके आए। बहुत अच्छा कार्य हो गया ।

भगवान :- कपड़े कैसे पहने थे ?

भक्त :- वह तो सब हमारे में अब ऐसा ही चल रह है .. अब आपके आगे क्याँ छूपाना ? एकदम बेहुदे .. दूसरों की नजर बिगड़े ऐसे चुस्त / छोटे वेस्टर्न कपड़े ।

भगवान :- आपकी यात्रा का ८० % फल जलकर खाख हो गया । घर से ही संस्कारी मर्यादाशील भारतीय वस्त्रों में सर ढ़ककर नीकले होते तो ऐसा नहीं होता । तीर्थोपवास किया था ?

भक्त :- नहीं, भगवान , हमने तो ट्रेन में रात को भी खाया, सुबह ६ बजे ट्रेनमें नाश्ता भी कर लिया । पहोंचकर सीधी यात्रा हो सके ना ? और यात्रा के बाद भी अभक्ष्य – रात्रिभोजन तो किया ही । यह जीभ वैसी की वैसी तो बैठ नहीं सकती ।

(अनुसंधान पान-५ पर)

एक काल्पनिक सत्य घटना

(4th page से चालु)

भगवान :- आप का बाकी का २०% फल भी जल गया, और उपर से दूसरा १२०% पाप बंध किया । तीर्थ में तो पक्का उपवास करना चाहिए । वह संभवित न हो तो शुध्ध कल्प्य परिमित चीजों से आयंबिल, एकासणा या बियासणा करना चाहिए । वह भी न हो सके तो शुध्ध कल्प्य परिमित चीजों से नवकारशी करनी चाहिए । आपकी दशा तो ऐसी हो गई कि धंधा करने गए और कंगाल होकर आए । वहाँ कोई दूसरी गड़बड़ तो नहीं की ना ?

भक्त :- भगवान ! आप तो सब जानते ही हो इसीलिए जूठ तो क्याँ कहे ? हम तो विजातीय का हाथ पकड़ के भी चढ़ते है, उसका सहारा भी लेते चलते है, बेफाम पिकनिक पोईन्ट की तरह गिरिराज के परिसर में हमारे फोटो भी खिंचवाते है, रात को धर्मशाला में होटल/रिसोर्ट की तरह भी वर्तन करते है, और मोबाईल पर जैसे-तैसे प्रोग्राम भी देखते है ।

भगवान :- आप संसार में बंधे हुए पापों को धोने गए थे ? या संसार में भी न बांध सके इतने सारे भयंकर पापों को बांधने गए थे । आपको पता है ?

अन्यस्थाने कृतं पापं, तीर्थस्थाने विमुञ्चति ।
तीर्थस्थाने कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति।।

जो पाप अन्यस्थान पर किया हो,
वह पाप तीर्थस्थान पर धो सकते हो ।

किन्तु जो पाप तीर्थस्थान में किया हो ,
वो तो वज्र के लेप की तरह बँधता है ।
वो पाप कही भी धूल नहीं सकता ,
भयंकर दुःख भुगतकर रो रोकर , मर मरकर
उस पाप का फल भुगतना पड़ता है।

वत्स !

इस तीर्थ का नाम है सिद्धाचल ।

आप यहाँ तो सीधे चलो ।

आप समज लो कि शत्रुंजय वह आपकी संवत्सरी है । संभवित हो तो वहाँ उपवास ही करना चाहिए, कम – से-कम उसके ५० कि.मी. के परिसर में अभक्ष्य – रात्रिभोजन तो नहीं ही हो सकता ।

आप समजलो कि शत्रुंजय वो आपका संयमजीवन है । उसके ५० कि.मी. के परिसर में विजातीय का स्पर्श भी नहीं हो सकता । आप समज लो कि शत्रुंजय वह आपका साधनाजीवन है । उसके ५० कि.मी. के परिसर में अपने फोटो गिराना, वेस्टर्न कपड़े पहेनना, मोबाईल मचड़ना , हसी-मजाक करना बगैरह तो नहीं ही हो सकता ।

वत्स !

मैं यहाँ महाविदेह में गिरिराज के और भरतक्षेत्र के लोगों के सौभाग्य की प्रशंसा करता हुँ । यहा के भाविक आपके सौभाग्य की इर्ष्या करते है और आप ऐसे उत्कृष्ट तीर्थ को पाकर उसकी यात्रा के निमित्त से ही उस की इतनी सारी घोर आशातनाएँ करते हो ?

बस, अब बहुत हुआ, अब संकल्प करो, घर से नीकलो तब से एकदम सीधे चलो । तो ही आपको यह सिद्धाचल फलीभूत होगा । नहीं तो यह सभी पाप आपको बहुत भारी पड़ जाएँगे ।

देखते रहना
वह ज़हर है
देकभाल करना
वह अमृत है

हमने की हुई यात्राओं को सचमुच अमृत बनानी हो तो तीर्थ-उपेक्ष का ज़हर पीने का छोड दे

हम हमें पुछे कि तीर्थरक्षा के लिए हमने कितना समय दिया ? और कितनी संपत्ति दी ?

न हम शासन के कार्यों के लिए आगे आये है औ न ही आगे आनेवालों को सहयोग दिया है । शासन तकलीफ में हो और हमें कोई पीडा न हो तो हम शासन के सभ्य ? या उसके दुश्मन ?

हम हमें पुछे कि कया वोचमेन रख देने से तीर्थ बच जाएगा ? हमें उसलिए कुछभी करने कि जरुरत नहीं ?

तीर्थ की उपेक्षा सारे भविष्य को भयानक बना देती है । तीर्थ की उपेक्षा वह घरकी अंदर लगाया हुआ खतरनाक बोम्ब है, उसका जल्द से निकाल कर दो, नहीं तो सबकुछ खलास हो जाएगा ।

गिरिराज के समग्र
चढ़ाव उतराण में पढ़ पाए
ऐसे सुंदर बोर्ड्स
आप यह पुस्तक में से रख सकते हो
ज्ञान स्वामिवात्सल्य
जिससे एक –एक
यात्रिक भावोंसे
हराभरा हो जाए ।

गिरिराज के परिसर में
निवास करती हुई
एक एक व्यक्तिको आप
एक पोकेट बुक दे सकते हो
***Taste* जैनीझम**
जिससे वह जिनशासन के
रसास्वाद को चखकर
उसकी गरिमा को
समझ पाए ।

गिरिराज तलेटी रोड
और अंदर की सडकों पर
आप यह पुस्तकों में से
सुंदर बोर्डस रख सकते हो।
God महावीर *in My Eye*
जैनीझम *in My Eye*
जिससे सबका हृदय
जिनशासन के प्रति
अहोभाव से
झूक जाय ।

रवतरे की घंटी

भक्खेइ जो उवेक्खइ, जिणदव्वं तु सावओ ।
पण्णाहीणो भवे सो उ, लिप्पइ पावकम्मुणा ॥ १०४ ॥

संबोध प्रकरण में
१४४४ ग्रंथ कर्ता पू. हरिभद्रसुरि म.सा. कहते है
देवद्रव्य – जिनालय – तीर्थ की संपत्ति
का जो भक्षण करे और
जो उसकी उपेक्षा भी करे
वह श्रावक मूर्ख बनता है
और पाप कर्म से बंधता है ।

You Can Do
गिरिराज के एक एक यात्रिक को
आप एक पोकेट बुक दे सकते हो !
पालीताणा आओ तब
जिससे गिरिराज की आशातना समाप्त हो
जिससे तीर्थ की समस्या समाप्त हो
और वह यात्रिक को यात्रा का
उत्कृष्ट फल मिले ।

तीर्थ में
तोड़–फोड़ करनी
यों तीर्थ में होती हुई
तोड़–फोड़ तो
देखते रहना उपेक्षा करनी
हमारी जो शक्तिहो,
वह रक्षा के लिए लगा न देनी,
यह घोर पाप का कारण है
मैंने मर्डर नहीं किया
इतना काफी नहीं होता मैं ठंडे कलेजे से
मर्डर देखते रहा तो भी मैं उतना ही गुनेगार हूँ ।
कुछ समज में आ रहा है आपको ?

घर के साथ
हमको
आत्मीयता है,
उसमें तोड़-फोड होती होगी
तो हम जान पटक देंगे ,
सब ताकात लगा के उसकी रक्षा करेंगे ,
तीर्थ के साथ हमे आत्मीयता कितनी ?
अगर हमें ऐसी कोई लगाव नहीं
तो हमने कीई हुई यात्राओं का
क्याँ अर्थ रहेगा ?

गिरिराज परिसर के सभी शिक्षकों को
आप यह पुस्तक दे सकते हो -
चमत्कारों की दिलधडक दास्तान
आदिनाथ ने वंदन अमारा
जिससे ने जैवत्त्व
का परिचय पा सके

यात्रा से ज्यादा कुछ भी नहीं ?

आयाणं जो भुंजइ, पडिवण्णधणं ण देइ देवस्स ।
णस्संतं समुविक्खइ, सो वि हु परिभमइ संसारे ॥ ११० ॥

संबोध प्रकरण में १४४४ ग्रंथकर्ता
पूज्य हरिभद्रसुरि महाराजा कहते है –
जो देवद्रव्य की आय खुद उपयोग करे,
या खुद ने बोली हुई बोली की रकम न भरे ,
या विनाश होते हुए देवद्रव्य–देरासर–तीर्थ की
ठंडे कलेजे से उपेक्षा करे,
वो भी संसार में भटकता रहता है ।

Giriraj Says

आज मुजे
नई धर्मशाला की जरुरत नहीं है
परंतु ऐसे विद्यालयों की जरुरत है
जहाँ मेरा सन्मान के साथ
परिचय दिया जाए और
मेरी आशातनाओ की
कोई गुंजाईश न रहे ।

क्या चाहिए ?
झहर या अमृत ?

सव्वत्थामेण तहिं संघेण होति लग्गियव्वं तु ।
सचरितअचरित्तीण उ सव्वेसिं एव कज्जं तु ॥ १५७२ ॥

परम पावन श्री पंच कल्पआगम – भाष्य
जब चैत्य / तीर्थ लूंटा जा रहा हो,
उसकी संपत्ति और उसके अस्तित्व के
रक्षा का प्रश्न खड़ा होता हो,
तब वहाँ संघ को सभी शक्तिलगा देनी चाहिए ,
श्रमण हो या श्रावक , सबका यह कर्तव्य बनता है ।

ओ गिरिराज और दादा के भक्तों !

जरा ध्यान से सुनिए....

हलाहल झहर

एवं जो जिणदव्वं तु, सड्ढो भक्खे उविक्खए ।
विसं सो भक्खए बालो, जीवियट्ठी ण संसओ ।। १३५ ।।

परम पावन श्री श्राद्धदिनकृत्य ग्रंथ कहता है –
जिनालय / तीर्थ / देवद्रव्य का
जो श्रावक भक्षण करे ,
या दूसरे द्वारा उन्हका नाश होता हो,
उसकी उपेक्षा भी करे
वह मूर्ख है,
वह जीना तो चाहता है,
परंतु हलाहल झहर पीता है,
उसमें कोई शंका नहीं है ।

शत्रुंजय पर भगवान भराने मिले
तो 'लाखों' की तैयारीवाले
और वहाँ जिनालय करने की ईजाजत मिले तो
'करोडों' की तैयारीवाले श्रावकों को भी
रक्षा के लिए कितनी तैयारी है ?

बनाने के लिए श्रेष्ठ उल्लास और
बचाने का शून्य उल्लास

इसका फल घोर आशातना और तीर्थविनाश
के अलावा दूसरा क्याँ हो सकता है ?
हम जिसके लिए करते है
उन्हें ही सुनना – समजना नहीं चाहते
वही हमारी बहुत बड़ी करुणता है ।

अधुरी समज

जमुवेहंतो पावइ साहू वि भवं दुहं च सोऊणं ।
संकासमाइयाणं को चेइयदव्वमवहरइ ।।

परम पावन श्री पुष्पमाला ग्रंथ में मलधारी
श्री हेमचंद्रसुरिमहाराजा कहते है कि
जिनालय / तीर्थ / देवद्रव्य की उपेक्षा करे
तो साधू भी अनंत संसार और
दुःख की परंपरा पाता है ।
संकास बगैरह की कथाओं में
उसके भयानक फल बताये है,
तो यह हकीकत सुनकर
कौन चैत्यद्रव्य को लूंटे ?

सीधी नरक

धम्मं सो न याणेइ, जिणं वा वि जिणागमं ।
भक्खेइ जो उविक्खेइ, जिणदव्वं तु सावओ ।।
अहवा णरयाउयं तेण, बद्धं चेव ण संसओ ।
तत्तो वि सो चुओ संतो, दारिद्देण ण मुच्चइ ।।

परम पावन श्री श्राद्धदिनकृत्य ग्रंथ में कहा है –
जो श्रावक या जिनद्रव्य – जिनालय,
तीर्थ वगैरह संपत्ति का
स्वयं भक्षण करे
या दुसरों के द्वारा भक्षण होता हो
उसकी उपेक्षा करे,
तो वे
नहीं धर्म को समजे,
नहीं जिनेश्वर भगवान को समजे
और नहीं जिनागम को समजे ।
या तो उन्होंने पक्का नरक का
आयुष्य बांध लिया है,
पक्केतौर पर नरक में जाएँगे ,
और वहाँ से नीकलकर भी
कोई भव में गरीबी से नहीं बच पाएँगे ।

खतरे की घंटी

चेइयदव्वविणासे तद्दव्वविणासणे दुविहभेए ।
साहू उवेक्खमाणो अणंतसंसारिओ भणिओ ।। ४१५ ।।

उपदेशपद ग्रंथ में १४४४ ग्रंथ कर्ता
पूज्य हरिभद्रसुरि महाराजा –
जो चैत्यद्रव्य का योग्य देखभाल के अभाव
में अपने आप नाश होता हो या
फिर दूसरों के लूंटने की वजह से नाश होता हो,
तो सभी शक्ति लगाकर
उसकी रक्षा करनी चाहिए ।
श्रावक को भी रक्षा करनी चाहिए और
प्रेरणा आदि करने द्वारा
साधु को भी रक्षा करनी चाहिए ।
अगर साधु भी उसकी उपेक्षा करे तो
उसका अनंत संसार होता है
तो श्रावक का तो अनंत संसार होना ही है ।

गिरिराज गुंजन

अईमुत्ता मुनि अब
अईमुत्ता केवलज्ञानी बने है ।
नारद ऋषि उन्हे
शत्रुंजय गिरिराज का महिमा पूछते है
और केवलज्ञानी भगवान
शत्रुंजय गिरिराज की आराधना का फल कहते है –

पूआकरणे पुण्णं
एगगुणं सयगुणं च पडिमाए ।
जिणभवणेण सहस्सं
ऽणंतगुणं पालणे होइ ।।

श्री शत्रुंजय गिरिराज पर पूजा करने से
एक – गुना पुण्य मिलता है,
वहाँ जिनप्रतिमा भरने से सो–गुना पुण्य मिलता है ।
वहाँ जिनालय बंधाने से हजार गुना पुण्य मिलता है
और शत्रुंजय गिरिराज की रक्षा करने से
अनंतगुना पुण्य मिलता है ।
-परम पावन श्री शत्रुंजय लघुकल्प ग्रंथ
– गाथा नं.- १४

रक्षा में अपना क्याँ ?

जिणपवयणवुड्ढिकरं, पभावगं णाणदंसणगुणाणं ।
रक्खंतो जिणदव्वं, परित्तसंसारिओ होइ ।। ४१७ ।।

उपदेशपद ग्रंथ में
१४४४ ग्रंथकर्ता
पू. हरिप्रभसुरि महाराजा कहते है –
जिनद्रव्य - मिलकतरूप में,
देरासर रूप में या तीर्थरूप में हो,
वह जिनशासन की वृद्धि करनेवाला है ;
ज्ञान – दर्शनगुणों का प्रभावक है,
जो उसकी रक्षा करता है
उसकी संसार की रखडपट्टी छोटी हो जाती है ।
वह नजदीक के समय में
परमपद को पाता है ।

तीर्थ को लूंटना वह पाप है – महा पाप है

इतना तो हमे समज में आता है ,
हम ऐसा हरगीझ नहीं करनेवाले
ऐसी हमारी समज है ।
किन्तु यह मान्यता अधुरी है ।
जब हम समजेंगे कि
तीर्थ लूंट रहा हो और उसे देखते रहना –
उपेक्षा करनी वह भी महापाप है,
और ऐसा हरगीझ नहीं करना चाहिए
तब वह समज संपूर्ण होगी ।

जो कार्य इतना ज्यादा महत्व का हो,
कि जिसके खातिर व्रत या महाव्रत भी
साईड में रख सकते हो, नहीं ,
बल्कि बाजु में रखना ही चाहिए ,
उस कार्य के खातिर हम हमारे
संसार को भी साईड में नहीं रख सकते ?
उस कार्य खातिर हम
हमारे लोभ और धन के ममत्व को भी
साईड में नहीं रख सकते ?

GIRIRAJ SAYS

Shame

ववसायफलं विहवो, विहवस्स फलं सुपत्तविणिओगो ।
तयभावे ववसाओ, विहवो वि य दुग्गइणिमित्तं ।।
परम पावन श्री श्राद्धगुणविवरण
ग्रंथ में कहा है कि –
व्यवसाय का फल है वैभव ।
वैभव का फल है
शुभ पात्र में विनियोग
उसके अभाव में व्यवसाय
और वैभव
यह दोनो दुर्गति
का कारण
होते है ।

मेरा
इतना विराट
परिसर
और
इतना बड़ा चढ़ने –
उतरने का मार्ग परंतु सब कुछ
एकदम मौन मानो कोई सामान्य –
बिनधार्मिक स्थल और पर्वत हो ऐसा ही
मेरा दिखाव और इसीलिए ही
मेरे आसपास और
मेरे उपर भी बिन –
धार्मिक प्रवृत्तियाँ और आशातनाओं की
बौछार ।
आपको क्यों ऐसा भाव नहीं होता कि
मेरे परिसर में और
मेरे ऊपर दस-दस फूट के अंतर पर
ऐसी अद्भूत तकती / बोर्ड लगाए हो कि
जो भी व्यक्तिवहाँ से गुजरे वह
मेरी अस्मिता पर फिदा हो जाए ।
शास्त्रवचन और सरल भाषांतर ..
अजब-गजब के प्रभाव की घटनाए..
फिदा-फिदा हो जाए ऐसे इतिहास
आज के तारीख में
मेरी वजह से जाहिर
जनता पर होते हुए उपकार ..
अठरह आलम को
मेरी वजह से
मिलती
आजीविका

शासन के
काम में
न आऐ वह बेलेन्स
हमें भवोभव
इम्बेलेन्स देनेवाली है ।
हमारी जेब भरी हुई हो और
शासन के काम आर्थिक
तंगी की वजह से
लटक पड़े हो
इसके जैसी शरम की बात दूसरी
कौन सी हो सकती है ?

आप के पास मेरी नव्वाणु का **concept** है..
अकेली यात्रा का **concept** है
मेरी छाया में
चातुर्मास या उपधान कराने का **concept** है
मेरे परिसर में
भगवान भराने का या जिनालय बनाने के
आपके सपने है...
शक्तिबहार के चढ़ावे लेकर
पहेली पूजा करने तक की आप की ख्वाईश है
४००-४०० कि.मी. से विराट संघयात्रा लेकर
आने का आपका प्लान है ।
किन्तु
मेरी रक्षा का आपके पास
कोई **concept** ही नहीं ।
जो प्रथम कर्तव्य है
वो आपको अंत का
कर्तव्य भी नहीं लगता ।
बुर मत लगाना – एक बात कहुँ ?
आप बहुत भाव से
आपकी 'मा' को सोने का
नेकलेस पहना रहे हो
किन्तु उसी समय उसका गला कटा जा रहा है
वह आप देखते नहीं
या देखना नहीं चाहते
शायद दिख जाए तो भी 'माँ' की जान बचानी
वह आपको आपका विषय नहीं लगता ।
गला कट रहा हो तब सोने के
नेकलेस का क्या अर्थ ?
यह प्रश्न आपको नहीं जगता !
गला कट रहा हो
वहाँ सोने के नेकलेस का क्या अर्थ ?
यह प्रश्न आपको जगता नहीं
नेकलेस और नेक-लेस
यह दोनो समांतर चल रही
अत्यंत विचित्र परिस्थिती में से
मैं गुजर रहा हुँ
यह दोनो परिस्थितिओं के लिए
आप ही जिम्मेदार हो
प्लीझ ,
आपकी आदतों से जरा बाहर आओ
और आपके 'माँ' की परिस्थिति को समजो
नेकलेस बिलकुल गलत नहीं
बूरा भी नहीं
एक नहीं, चार नेकलेस पहनाना
परंतु
पहले आपकी सभी शक्तिओं को लगाकर
उसके कटते हुए गले को रुका दो ।

क्यों नही ?

चैत्यादिरक्षार्थं प्रत्यनीकनिग्रहेण
प्रतिपन्ननियमभङ्गो न भवति ।
परम पावन श्री द्रव्यसप्ततिका ग्रंथ कहता है –
जिनालय , तीर्थ , देवद्रव्य वगैरह की
रक्षा करने के लिए
शासन के शत्रु का निग्रह
करना पड़े तो भी
श्रावक या साधु के व्रत
का भंग नहीं होता ।

क्या
आपको
मालूम है ?
हमारे देश में
एक बड़ा टावर है ।
उसमें थोड़े धर्म के लोगों
को तीन दिन के लिए
विशिष्ट प्रकार की ट्रेनिंग देने में
आती है। यह ट्रेनिंग का विषय वह
होता है कि वह लोग उन्हकें तीर्थस्थान
में यात्रा करने जाए वहाँ उन्हे किस प्रकार
यात्रा करनी, क्याँ करना, क्याँ नही करना
वगैरह क्यों आपने मेरी यात्रा के लिए आज तक
एसी कोई व्यवस्था नहीं की ?
यह सब यात्रालु **fail** होते है
क्योंकि वे सीधी **exam** देते है ।
उन्होंने बिलकुल अभ्यास किया नहीं होता ।
No School ...
No Tuition...
No Classes...
No Syllabus...
No Personal Guidance...
No study...
Only Exam...
इसमें दुसरे कौन से **Result** की
अपेक्षा रख सकते है ?
चलों, तीन दिवस नहीं तो
एक दिन की भी व्यवस्था सही ?
कम से कम यात्रा की अगली रात तीन घंटे की
सुपर ट्रेनिंग हो ऐसा भी कुछ भी नहीं ?
क्यों ?
और इसका परिणाम क्याँ आता है ?
मालूम है ?
study की व्यवस्था न करनी
वह **fail** करने की व्यवस्था के बराबर है,
यात्रा के ट्रेनींग की कोई भी व्यवस्था न करनी ।
वह आशतना होते रहे
उसकी व्यवस्था करने बराबर है ।
मेरी बात आपको समझ में आती है ?

आपको मालूम है ?
कि गाँव– बहारगाव की अनगिनत
स्कूल मेरी मुलाक़ात के लिए आती है ।
उसमें उन्हका यात्रा का उद्देश नहीं होता
पिकनिक का उद्देश होता है ।
किन्तु 'तीर्थ' उसे कहाँ जाता है
जो पिकनिक पर आए हुए को भी
पावन कर दे ।
वे स्कूल के निर्दोष बच्चों को
मेरा सच्चा परिचय करा के दे
ऐसी नहीं है कोई व्यक्ति,
नहीं है कोई व्यवस्था ।
पालीताणा याने
तलेटी की थोड़ी सीडीयाँ
और थोडा खाना-पीना..
इतनी व्याख्या लेकर
वे वहाँ से विदाय ले रहे हो,
तब आपका सर शरम से
झुक नहीं जाना चाहिए ?
आपने अगर सच्ची और सुंदर प्रस्तुति करनेवाला
एक **Auditorium** बनाया होता,
तो हर साल लाखों लोग
मेरे प्रति आदरभाव को निर्मित कर पाते
और आज मेरे यह हाल नही होते ।

आपने तलेटी में इतनी
ईमारतें खड़ी की परंतु
एक ईमारत अगर ऐसी
खड़ी की होती
जिसमें सेकंडो / हजारो लोगों को
मेरा महिमा समजाने में आए
मेरी गरिमा और गौरवसे भरा हुआ
इतिहास समजाने में आए
मेरे उपासकों की घोर तपस्या के साथ
यात्राए कहने में आए
जिसको देख-समजकर किसी के भी
रोवटे खड़े हो जाए
आँख में से अनराधार अश्रू बहने लगे
और वह व्यक्तिकितना भी
नास्तिक हो तो भी
वह मेरा उपासक बन जाय,
मेरे प्रति सूक्ष्म भी आशातना करनी उसके
लिए अशक्य बन जाए ।
आप अगर ऐसा कर सके होते,
तो आज मेरी ऐसे हाल नही होते ।

Why not ?

इसमें क्याँ अशक्य है ?
इसमें क्याँ ज्यादा है ?
सच कहुँ ?
मैं मौन हुँ, इसीलिए मार खा रहा हुँ ।
मुझे मुखर हो जाने दो
बाद में मेरी आशातना एक भूतकाल बन जाएगी ,
आपको ऐसा कुछ न करना हो
और आपकी मानी हुई भक्तिही करते रहना हो
तो एक अपेक्षा से यह घोर आशातनाओं में
आपका भी हिस्सा नहीं कह सकते ?

आज मुज़े
बड़े चढ़ावे की ज़रुरत नहीं है
पर ऐसे समज़दार संवेदनशील
भक्त की जरुरत है ।
जो मेरे मूलोन्मूलन के
हंमेशा के लिये अटकादे ।

आज मुज़े
यात्री की नहीं
रक्षायात्री की ज़रुरत है
जो मेरी रक्षा के सही
उपायो के द्वारा
मेरी उत्कृष्ट यात्रा करे ।

आपकी संवेदना को हमारा लाख-लाख वंदन

शाश्वत गिरिराज और दादा आदिनाथ के प्रति परम भक्ति
संवेदना के साथ ११ रत्नस्तंभ का १ साथ दान देनेवाले

मातुश्री कमलाबहेन लीलाचंदभाई वेलाणी खारीयावाला
ह. रक्षाबहेन दिलीपकुमार

सुवर्णस्तंभ :

संयमैकलक्षी प.पू.आ.देव श्री जगच्चन्द्रसूरीश्वरजी महाराजाना
७०वे संयमवर्ष और ९३वे जन्मदिन निमित्ते
सुश्राविका श्री जयश्रीबहेन दिलीपभाई शाह परिवार

श्री जिनेशभाई कीर्तिलाल शाह

मातृश्री लीलावतीबेन, पिताश्री केशवलाल, काकाश्री हरचंदभाईके आत्मश्रेयार्थ
ह. मंदाबेन हसमुखभाई केशवलाल शाह परिवार

वेलाणी राजेशकुमार पुनमचंदभाई खारीयावाला

रजतस्तंभ :

प्रभावतीबेन नाथालाल शाह

अेक सद्गृहस्थ की तरफ से

दिलीपभाई विनयचंद्र शाह

आधारस्तंभ

राज, आर्या, सुची - सेटेलाईट, अहमदाबाद
सिद्ध, स्तुती, शांती - टोरेन्टो, केनेडा
प.पू.सा.श्री नीतिधर्माश्रीजी म.सा.की प्रेरणा से श्री धनलक्ष्मीबेन चीमनलाल शाह की तरफ से
श्रीमती पुष्पाबेन रमणीकलाल शाह - दसाडावाला
श्री नीलहर्ष जैन संघ वासणा की बहेनो
रचीत नितीनभाई शाह

शुभेच्छक

सौम्य गोल्ड । जयंतिलाल हिराचंद शाह । किर्तीकुमार शांतिलाल झवेरी

शत्रुंजय गिरिराज और दादा आदिनाथ के भक्तों के लिए प्लेटिनम अवसर

हमने यात्राए की, नव्वाणु और उपधान किए छ'रिपालित संघ भी निकाले और गिरिपूजन भी किए
किन्तु सौराष्ट्र के अंदर शत्रुंजय गिरिराज और दादा आदिनाथ की पहचान नहीं करवाई ।
इसी वजह से आज यह महातीर्थ में
हृदय को चूभनेवाली, आघातजनक आशातनाओं का कोई हिसाब नहीं ।

पहचान होगी

तो

आशातनाए नाबूद होगी

लाखो लोगों को यह पहचान करवाने कि लिए शुरु हो चूका है

ગિરિરાજ ગુંજન

छोटे-बडे सबका मनपसंद रंगबेरंगी सचित्र बाल साप्ताहिक

जिसमें शत्रुंजय माहात्म्य आदि प्राचीन ग्रंथो से लेकर वर्तमान समय की अद्भूत घटनाओं के आधार से शत्रुंजय गिरिराज और दादा आदिनाथ की पहचान कराई जा रही है इस के २४ अंको की कुल १ लाख प्रतियों का वितरण हो चूका है । अनेक गीतार्थ गुरुभगवंत इसमें मार्गदर्शन, लेखन और संशोधन द्वारा सहयोग दे रहे है ।

अगर गिरिराज अभी भी मौन रहा तो भविष्य का दृश्य देख ही न पाए ऐसा होगा ।
प्लीझ, उसे गुंजने दो - गिरिराज गुंजन

गिरिराज प्रोब्लेम तो केवल एक example है
हम हर प्रोब्लेम को उठने से पहले ही खतम कर सकते है यदि हम सच्चे जैन बने...
यदि आप चाहते है कि आपको सच्चे जैन बनना है... और शुध्ध जैन बनना है, तो आप पढ़ सकते है

जैनीज़्म सीरीज़ 10 books + Articles Gujarati
जिनशासन सीरीज़ 20 books Gujarati
उपमिति सीरीज़ 18 books Gujarati
चमत्कारो + F सीरीज़ Gujarati

Uplift yourself this is the only way to uplift Jinshasan

- जैनीज़्म - Hindi
- जैनीज़्म विश्वकी सभी समस्याओं का समाधान - Hindi
- नारी in jainism - Hindi
- He is Here - Hindi
- रात को खाने से पहेले Hindi
- टेस्ट जैनीज़्म Hindi
- उपमिति भव प्रपंच कथा भाग-१ Hindi
- वर्षीतप कि रहस्ययात्रा Hindi
- यह है संसार Hindi
- मंगनी से पहेले Hindi
- अप्पहिय कायव्वं Hindi
- दिले इस डेंजरस Hindi
- संयम कब हि मिले Hindi
- समाधान Hindi
- करुण Hindi
- देथ फुड Hindi
- पालिताना आओ तब Hindi
- संस्कार कुरुष्ठ Hindi
- लव यु डोटर Hindi
- यूनिफोर्म Hindi
- गिरिराज गुंजन (पार्ट १ तो २४) Hindi

For Free e-book - Book link bit.ly/priyambooks

आज तक

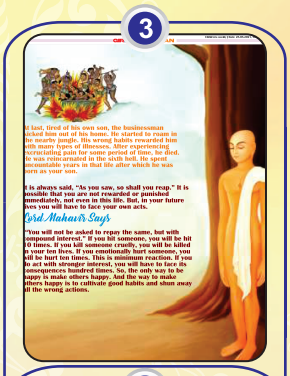

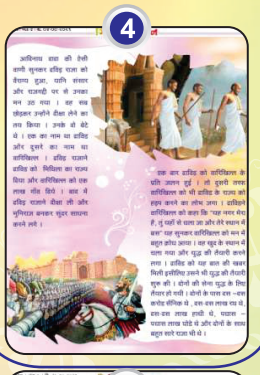

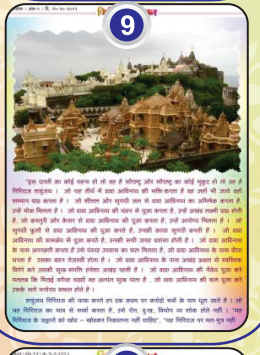

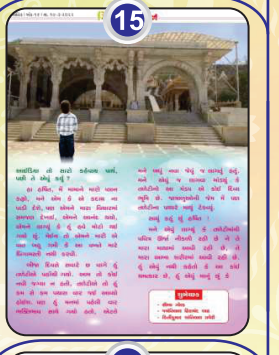

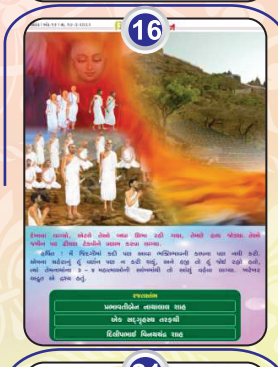

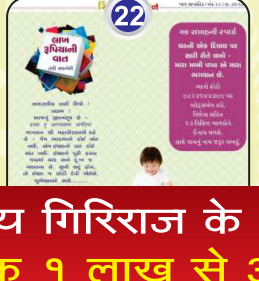

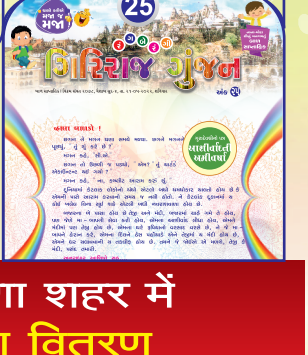

श्री शत्रुंजय गिरिराज के आसपास के गाँवो और पालीताणा शहर में आज तक १ लाख से अधिक 'गिरिराज गुंजन' का वितरण

MORE THAN 1 LAC COPIES.

पालीताणा शहेर में और आजुबाजु के ७८ गावों में
इसका बड़े पयमाने पर प्रसार हो इस हेतु से यह योजना प्रस्तुत है

रत्न स्तंभ लाभार्थी	1,00,000 Rs.
सुवर्ण स्तंभ लाभार्थी	51,000 Rs.
रजत स्तंभ लाभार्थी	21,000 Rs.
आधार स्तंभ लाभार्थी	11,000 Rs.
आधार शिला लाभार्थी	5,000 Rs.
मुख्य शिला लाभार्थी	2,500 Rs.
कूर्म शिला लाभार्थी	1,000 Rs.
पुण्य शिला लाभार्थी	501 Rs.
पावन शिला लाभार्थी	101 Rs.
पुनित शिला लाभार्थी	51 Rs.
पवित्र शिला लाभार्थी	11 Rs.

ગિરિરાજ ગુંજન - YouTube Channel પરથી પ્રસિદ્ધ થનારા વિડીયો જોવા માટે બાજુનો QR Code Scan કરી ગિરિરાજ ગુંજન - YouTube Channelને Subscribe કરો અને ઘંટડીના બટન પર ક્લીક કરો.

ગિરિરાજ ગુંજન - ગુજરાતી - હિન્દી - Englishમાં Epaper વાંચવા માટે બાજુનો QR Code Scan કરો.

गिरिराज और दादा के आर्थिक रुप से छोटे से छोटे भक्त का भी भावनापूर्वक दिया हुआ दान इस आयोजन को चैतन्य से धड़कता हुआ बना देगा ।

इसीलिए इस योजना में ११ रु. तक की योजना रखी हुई है । सभी अपनी शक्ति के अनुसार लाभ ले और गिरिराज और दादा के एक भी भक्त बाकी न रहे ऐसी खास बिनती है ।

आशीर्वाद और मार्गदर्शनदाता
अनेक समुदाय के गीतार्थ गुरुभगवंत

अनुभव
गिरिराज परिसर को सद्भाव और भक्ति परिसर बनाने के अनेकानेक प्रयासो

संपर्क : गिरिराज गुंजन : 9974300912 I Krunalbhai : 9712903533 I Abhay : 9428702794

दाताओंसे विनम्र निवेदन है की नाम, पता, संपर्क और payment transfer की details 9974300912 पे whatsapp किजिए।

समस्त महाजन बेजुबान प्राणियों का स्वजन
संस्कार रक्षा, जीव रक्षा और पर्यावरण रक्षा के लिए कार्यरत

A/c Name : Samast Mahajan
Bank Name : HDFC Bank
Branch : Navrangpura Branch, Ahmedabad
A/c No. : 00062000016635
IFSC : HDFC0000006

गिरिराज गुंजन, तीन प्रकार से कार्यरत रहेगा ।

(१) साप्ताहिक के रुप में गृहघर पहुँचेगा (२) दृश्य-श्राव्य के माध्यमों द्वारा विस्तृत रुप से जिनशासन और गिरिराज का परिचय कराएगा (३) सद्भावना सिबिर का आयोजन भी करेगा । यह सभी लाभ दाताओं को प्राप्त होगा ।

Design By:Riddhi Graphics 9898705470 I Print By: Shah Vikram Manoj Brothers 9426972609